11-09-2020

गन्ने की कटाई-पेराई के बीच 24 घंटे की देरी से घटती है चीनी की माता

❑ वर्चुअल कार्यक्रम में केन्या एवं नाइजीरिया आदि देशों से 200 से अधिक प्रतिभागी हुए

कानपुर, 9 सितम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से शर्करा एवं संबद्ध उद्योगों में आपूर्ति प्रबंधन श्रृंखला विषय पर दो दिवसीय आनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि कोविंड-19 महामारी के परिदृश्य में चीनी मिलों एवं आसवनियों के बाधारहित संचालन के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की महत्ता बढ़ जाती है। विभिन्न प्रतिबंधों को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि खेतो से चीनी मिलों तक गन्ने की आपूर्ति को सुनिश्चित करने हेतु उचित तरीके से अपनाया जाये। लगभग 20,000 से 25,000 गन्ना उत्पादक किसान एक चीनी मिल को गन्ने की आपूर्ति करते है एवं गन्ने की कटाई से पेराई के बीच 24 घंटे की देरी होने पर इसमें उपस्थित चीनी की माता लगभग 5-10 प्रतिशत कम हो जाती है। यह माता विभिन्न प्रकार के वातावरण के तापमान और मौसम पर निर्भर करती है। प्रो. नरेंद्र मोहन ने आह्वान किया कि गन्ने के परिपक्वता की जानकारी, कटाई एवं आपूर्ति प्रबंधन के लिए आधुनिकतम सूचना एवं संचार माध्यमों का इस्तेमाल किया जाये। उन्होंने कहाकि आजकल ड्रोन का उपयोग सामान्य बात है और चीनी मिलें गन्ने की फसलों की वास्तिवक स्थितियों की जानकारी के लिए नवीनतम तकनीकी युक्त

वेबिनार में शामिल निदेशक प्रो नरेन्द्र मोहन व अन्य।

ड्रोन्स का उपयोग कर सकती है। प्रो. मोहन ने आगे कहाकि चीनी मिल मालिकों को गोदाम में भंडारण के लिए आई चीनी को पहले उत्पादित - पहले विक्रय के आधार पर बेचने के लिए रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग अपनाने पर ध्यान चाहिये। अरुणाचलम निदेशक स्वामीनाथन ने गुणवत्ता नियंत्रण, निर्यात को सुविधाजनक बनाने और उपभोक्ता संरक्षण के दृष्टिकोण से चीनी के प्रमाणन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहाकि ग्राहकों के विश्वास और ब्रांड की विश्वनीयता में वृद्धि के साथ ही ग्राहकों को झूठे और भ्रामक दावों से भी बचाता है। गन्ना आपूर्ति प्रबंधन पर चर्चा करते हुए अफ्रीका परियोजना प्रबंधक डा. एन.आर. मुरली ने गन्ना आपूर्ति की विभिन्न प्रणालियों तथा नाव, रेल, बैलगाड़ी, ट्रैक्टर, ट्रालियों और ट्रकों के माध्यम से गन्ने के परिवहन पर संक्षिप्त वितरण प्रस्तुत किया। ग्लोबल केन शुगर, प्रबंध निदेशक डा. जी.एस. सी. राव ने चीनी क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखला के कुशल प्रबंधन के लिए नवीनतम उपकरणों और प्रौद्योगिकी को अपनाने के बारे में चर्चा की। वर्चुअल प्लेटफार्म के तहत इस कार्यक्रम में केन्या एवं नाइजीरिया आदि देशों से 200 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन कोर्स कन्वेर ब्रजेश सिंह ने किया।

पैकेजिंग पर ध्यान दें चीनी मिलें : नरेन्द्र मोहन

कानपुर (एसएनबी)। चीनी मिलें उपभोक्ताओं के साथ-साथ निर्यात के उद्देश्य से पैकेजिंग पर विशेष ध्यान दें। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में 'चीनी एवं सम्बद्ध उद्योगों के सप्लाई चेन प्रबंधन' विषय पर आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन मौके पर संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कही। कार्यक्रम के दौरान पैकेजिंग की विविध प्रणालियों की जानकारी दी गयी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समापन

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन मौके पर प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि चीनी मिलों को उपभोक्ताओं के लिये एक किलोग्राम और निर्यात के उद्देश्य से एक टन तक के जम्बो पैक में चीनी की पैकेजिंग पर ध्यान देना चाहिये। आज के समय में स्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया और जोखिम विश्लेषण व विशेष नियंत्रण केंद्र को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि चीनी आवश्यक उपयोग की वस्तु है और कोविड-19 को देखते हुए उपभोक्ता भी खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के प्रति जागरूक हैं। भारतीय पैकेजिंग संस्थान के संयुक्त निदेशक सह क्षेत्रीय प्रबन्धक माधव चक्रवर्ती ने चीनी की पैकेजिंग की विविध प्रणालियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि चीनी एक ऐसा पदार्थ है, जो वातावरण से नमी सोख कर समय बीतने के साथ-साथ खराब होने लगता है। आज के समय में स्पेशल शुगर्स का बाजार बढ़ता जा रहा है। ऐसे में इनकी पैकेजिंग भी विशेष सावधानी के साथ की जानी चाहिये ताकि इनका परिवहन सुगमता के साथ किया जा सके। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के तकनीकी अधिकारी बृजेश सिंह ने चीनी प्रसंस्करण के दौरान चीनी को ऑटोमेटिक तौलने और डिस्पैच नियंत्रण की प्रणाली को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम से डीसीएम श्रीराम के कार्यकारी निदेशक आरएल तमक सहित कई जानकार जुड़े थे।

Experts discuss supply chain management in sugar industry

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute Director Prof Narendra Mohan stressed the need for devising and adopting proper methodology for ensuring supplies to and from the units in the present pandemic scenario.

Highlighting the importance of training in the COVID-19 scenario for the smooth working of sugar factories and distilleries during the two-day online training programme on 'Supply chain management in sugar & allied industries', Prof Mohan said keeping in view the various restrictions, it was important to devise and adopt proper methodology to maintain the supply chain.

He called upon greater use of information and communication technology for assessing maturity of sugarcane, scheduling its harvest and arranging supply.

The NSI director said drones were very common nowadays and sugar factories could also use them for assessing the crop conditions.

He also underlined sugar warehouse management through adoption of radio frequency identification tags to sell the sugar on 'first in-first out' basis.

About 20,000-25,000 farmers supply sugarcane to the factories and with 24-hour delay in crushing, the sugar content may reduce by about 5 per cent to 10 per cent, depending upon the climatic conditions.

Givaudan (India) Pvt Ltd Director (Operations-India) Swaminathan Arunachalam highlighted the importance of certification of sugar for quality control, facilitating exports and also for consumer protection point of view.

He said since India was a sugar surplus country which was trying to export sugar to other countries, besides ISO 22000 & FSSAI certifications, under the present circumstances of COVID-19, it was important for the sugar industry to comply with IFS (International Food Standards) and SQF (Safe Quality Food) standards.

Elaborating on the importance of certifications, he said it improved customer trust and brand reliability besides protecting consumers from false and misleading claims.

General Manager, Africa Projects, NR Murali, while speaking on sugarcane supply management, presented overview of different supply systems, transport of cane through boat, rail, bullock cart, tractor-trolleys and trucks.

He said due to scarcity of farm labour, sugar industry was going to face challenges and farm mechanisation was going to become important. He said the harvesting and transport costs were about Rs 1,000-1,200 per ton which may increase further.

Murali added that looking to the small land holdings and capacity of the farmers to invest, there was need for developing tractor-mounted cane harvesters, de-trashing machines and cane-loaders.

Global Canesugar Services Managing Director Dr GSC Rao discussed the application of latest tools and technologies for efficient management of supply chain in sugar sector.

He advocated the use of mobile based e-learning apps for farmers and man-less weighment of sugarcane using smart cards. He said GPS installed vehicles were important for better tracking of supplies from and to sugar factories and distilleries and this needs to be implemented.

Dr Rao said on output side, there was a need for hygienic consumer packing of sugar for branding, surety of weight and longer shelf life. The programme was attended by over 200 participants, including those from Kenya and Nigeria.

गन्ना देर से पहुंचने पर घटा उत्पादन

कानपुर। खेतों से मिलों तक गन्ना पहुंचने में अगर 24 घंटे की भी देरी होती है तो चीनी का उत्पादन पांच फीसदी घट जाता है। इसलिए गन्ने की कटाई से लेकर चीनी मिल तक ले जाने के लिए परिवहन की व्यवस्था को नई तकनीकी व मशीनीकरण करने पर जोर देना चाहिए। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कही। उनकी इस बात का देश-विदेश में मौजूद विशेषज्ञों ने भी समर्थन दिया। संस्थान में शर्करा एवं संबद्ध उद्योगों में आपूर्ति प्रबंधन शृंखला विषय पर इंटरनेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया गया। स्वामीनाथन अरुणाचलन ने कहा कि देश वर्तमान में जरूरत से अधिक चीनी का उत्पादन कर रहा है। डॉ. जीएससी राव भी मौजूद रहे।

कोविड काल में ड्रोन से करें गन्ने की फसल की रखवाली

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में आयोजित दो दिवसीय वेबिनार के पहले दिन कोविड काल में गन्ना की फसल और चीनी प्रबंधन में मशीनों के अधिक इस्तेमाल का सुझाव दिया गया।

एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि इस समय श्रमिकों की कमी है। ऐसे में फसलों की निगरानी के लिए ड्रोन का इस्तेमाल करें। शर्करा एवं संबद्ध उद्योगों में आपूर्ति प्रबंधन श्रृंखला विषय पर आयोजित इस वेबिनार में निदेशक ने बताया कि गन्ने की कटाई और पेराई के बीच 24 घंटे की देरी होने पर चीनी की मात्रा पांच से 10 प्रतिशत तक कम हो जाती है। उन्होंने गन्ने को समय से काटने के लिए ट्रैक्टर हार्नेस के बारे में बताया गया। स्वामीनाथन अरुणाचलम, डॉ. एनआर मुरली आदि विशेषज्ञों ने भी विचार रखे।

गन्ने की फसल पर ड्रोन से रखें नजर ताकि कम न हो मिठास

जागरण संवाददाता, कानपुर : चीनी की मिठास, उसकी गुणवत्ता के लिए चीनी मिलें और डिस्टिलरी इकाइयां ड्रोन की मदद से खेतों में गन्ने की फसल पर नजर रख सकती हैं। गन्ने की कटाई से पेराई के बीच 24 घंटे की देरी होने पर चीनी की मात्रा पांच से 10 फीसद कम हो जाती है।

यह जानकारी राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से चीनी और उसके प्रबंधन पर आयोजित ई-प्रशिक्षण में निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने दी। उन्होंने कहा कि ड्रोन से गन्ने की परिपक्वता देखी जा सकती है, जिससे रोग और कीड़े का आकलन हो सकेगा। इससे फसलों का हाल पता चल जाता है। चीनी मिल मालिकों को भंडारण में रखी चीनी को पहले उत्पादन पहले विक्रय के आधार पर बेचना चाहिए, इससे चीनी की गुणवत्ता खराब नहीं होती है। रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन टैग का इस्तेमाल करके पता लगाया जा सकता है कि कौन सी शक्कर पहले बनी है और किसका उत्पादन बाद में हुआ है। मेसर्स गिवाउडन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक स्वामीनाथन अरुणाचलम ने चीनी के प्रमाणीकरण की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के समय इसकी आवश्यकता काफी है। भारत में चीनी सरप्लस है, जबकि इसका अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। ग्लोबल केन शुगर के प्रबंध निदेशक डॉ. जीएससी राव ने किसानों के लिए ई-लर्निंग एप और स्मार्ट कार्ड के प्रयोग की जानकारी दी। प्रशिक्षण में केन्या, नाइजीरिया समेत देश की चीनी मिलों के अधिकारी और विशेषज्ञ शामिल हुए।

कटाई व पेराई में अंतर से कम हो जाती है चीनी की मात्रा

कानपुर (एसएनबी)। गन्ने की कटाई और पेराई के बीच 24 घंटे की भी देरी गन्ने में उपस्थित चीनी की मात्रा को 5 से 10 फीसद कम हो जाती है। ऐसे में यह जरूरी है कि चीनी मिलों को गन्ना फसलों की वास्तविक स्थितियों की जानकारी के लिये नवीनतम तकनीकी का उपयोग करना चाहिये।

'शर्करा एवं सम्बद्ध उद्योगों में आपूर्ति प्रबंधन श्रंखला' विषय पर दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि एक चीनी मिल को लगभग 20 से 25 हजार किसान गन्ने की आपूर्ति करते हैं। गन्ने की कटाई से पेराई के बीच 24 घंटे का भी अंतर हो जाता है तो गन्ने में चीनी की मात्रा 5 से 10 फीसद कम हो जाती है। ऐसे में चीनी मिलों को गन्ने की परिपक्वता की जानकारी, कटाई और आपूर्ति प्रबंधन को संचार माध्यमों का इस्तेमाल करना चाहिये। गिवाडाउन इंडिया के निदेशक स्वामीनाथन अरुणाचलम ने गुणवत्ता नियंत्रण और निर्यात को सुविधाजनक बनाने और उपभोक्ता संरक्षण के दृष्टिकोण से चीनी प्रमाणन के महत्व की जानकारी दी। ग्लोबल केन शुगर के प्रबंध निदेशक डॉ. जीएससी राय ने चीनी क्षेत्र में आपूर्ति श्रंखला के कुशल प्रबंधन के लिये नवीनतम उपकरणों को अपनाने की चर्चा की। वर्चुअल कार्यक्रम में भारत के अलावा केन्या, नाइजीरिया सहित कई देशों के 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन बृजेश सिंह ने किया।

चीनी की पैकेजिंग पर जोर छोटे व जंबो पैक बनाएं

माई सिटी रिपोर्टर

एनएसआई के ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का समापन

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में आयोजित दो दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन पर गुरुवार को निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने चीनी की पैकेजिंग पर विशेष ध्यान देने कहा। उन्होंने बताया कि चीनी जल्दी खराब होने वाला उत्पाद है। ऐसे में छोटे उपभोक्ताओं के लिए एक किलो तथा व्यापार के लिए एक टन का जंबो पैक बनाया जाए। इसके लिए पैकेजिंग तकनीक की विभिन्न विधियां अपनाई जाएं। कोरोना काल में इस तरह की रणनीति बनाने की बहुत जरूरत है।

स्वच्छ उत्पादन प्रक्रिया और जोखिम विश्लेषण विषय पर आयोजित शिविर में निदेशक ने कहा कि कोरोना के चलते उपभोक्ता भी खाने-पीने की चीजों को लेकर जागरूक हो गए हैं। इसलिए खेत से लेकर फैक्टरी और दुकानों तक रणनीति बनाकर काम करना होगा। उत्पाद को उच्च गुणवत्ता के साथ ग्राहक के घर तक पहुंचाया जाए।

कहा कि आज के समय स्पेशल शुगर का बाजार बढ़ता जा रहा है। ब्राउन शुगर, आइसिंग शुगर और फोर्टिफाइड शुगर जिनमें अन्य तत्वों का समावेश है, उन्हें ग्राहक पसंद कर रहे हैं। कहा कि अच्छे उत्पाद की बिक्री के लिए ग्राहकों का विश्वास जीतने की जरूरत होती है। इस मौके पर पैकेजिंग की विभिन्न विधियों के बारे में भी बताया गया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने आयोजित किया दो दिवसीय ऑनलाइन प्र शिक्षण

कानपुर, 10 सितम्बर। चीनी एवं सम्बद्ध उद्योगों के सप्लाई चेन प्र बंधन के सम्बन्ध में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में दो दिवसीय आनलाइन प्र शिक्षण सत्र का समापन हुआ। कार्यक्रम के दूसरे दिन विशेषज्ञों द्वारा स्वच्छ प्रसंस्करण, उपभोक्ता एवं पर्यावरण अनुकूल पैकेजिंग तथा चीनी के भंडारण के दौरान ओटोमेशन के विषय पर विशेष प्र काश डाला। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन के द्वारा चीनी कारखानों का आह्वान किया गया कि वे उपभोक्ताओं के लिये एक किलोग्राम के उपभोक्ता पैक से लेकर निर्यात के उद्देश्य से एक टन तक के जम्बोपैक में चीनी की पैकेजिंग पर ध्यान दें। उन्होंने यह भी कहा कि आज के समय स्वच्छ उत्पादन प्र क्रिया और जोखिम विश्लेषण एवं विशेष नियंत्रण केन्द्र को अपनाने की जरूरत है। क योंकि चीनी आवश्यक उपभोग की वस्तु है और कोविड-19 को देखते हुए उपभोक्ता भी खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के प्रति जागरुक हैं। भारतीय पैकेजिं ग संस्थान नयी दिल्ली के संयुक्त निदेशक सह क्षेत्रीय प्रबंधक माधव चक्रवर्ती ने चीनी पैकेजिंग के विविध प्र णालियों पर व्यापक प्रकाश डाला।